

# PAPER-III KONKANI

## Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) \_\_\_\_\_

(Name) \_\_\_\_\_

2. (Signature) \_\_\_\_\_

(Name) \_\_\_\_\_

**J 8 5 1 6**

Time : 2 ½ hours]

OMR Sheet No. : .....

(To be filled by the Candidate)

Roll No. 

|  |  |  |  |  |  |  |  |
|--|--|--|--|--|--|--|--|
|  |  |  |  |  |  |  |  |
|--|--|--|--|--|--|--|--|

(In figures as per admission card)

Roll No. \_\_\_\_\_

(In words)

[Maximum Marks : 150

Number of Pages in this Booklet : 16

Number of Questions in this Booklet : 75

### Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. This paper consists of seventy five multiple-choice type of questions.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
  - (i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
  - (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
  - (iii) After this verification is over, the Test Booklet Number should be entered on the OMR Sheet and the OMR Sheet Number should be entered on this Test Booklet.
4. Each item has four alternative responses marked (1), (2), (3) and (4). You have to darken the circle as indicated below on the correct response against each item.  
**Example :** ① ② ● ④  
where (3) is the correct response.
5. Your responses to the items are to be indicated in the **OMR Sheet given inside the Booklet only**. If you mark your response at any place other than in the circle in the OMR Sheet, it will not be evaluated.
6. Read instructions given inside carefully.
7. Rough Work is to be done in the end of this booklet.
8. If you write your Name, Roll Number, Phone Number or put any mark on any part of the OMR Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, or use abusive language or employ any other unfair means, such as change of response by scratching or using white fluid, you will render yourself liable to disqualification.
9. You have to return the Original OMR Sheet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall. You are, however, allowed to carry original question booklet and duplicate copy of OMR Sheet on conclusion of examination.
10. Use only **Black Ball point pen provided by C.B.S.E.**
11. Use of any calculator or log table etc., is prohibited.
12. There is no negative marks for incorrect answers.

### परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. इस पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
2. इस प्रश्न-पत्र में पचहत्तर बहुविकल्पीय प्रश्न हैं ।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे, जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
  - (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए पुस्तिका पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
  - (ii) कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आये हों या सीरियल में न हों अर्थात् किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।
  - (iii) इस जाँच के बाद प्रश्न-पुस्तिका का नंबर OMR पत्रक पर अंकित करें और OMR पत्रक का नंबर इस प्रश्न-पुस्तिका पर अंकित कर दें ।
4. प्रत्येक प्रश्न के लिए चार उत्तर विकल्प (1), (2), (3) तथा (4) दिये गये हैं । आपको सही उत्तर के वृत्त को पेन से भरकर काला करना है जैसा कि नीचे दिखाया गया है :  
**उदाहरण :** ① ② ● ④  
जबकि (3) सही उत्तर है ।
5. प्रश्नों के उत्तर केवल प्रश्न पुस्तिका के अन्दर दिये गये OMR पत्रक पर ही अंकित करने हैं । यदि आप OMR पत्रक पर दिये गये वृत्त के अलावा किसी अन्य स्थान पर उत्तर चिह्नांकित करते हैं, तो उसका मूल्यांकन नहीं होगा ।
6. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
7. कच्चा काम (Rough Work) इस पुस्तिका के अन्तिम पृष्ठ पर करें ।
8. यदि आप OMR पत्रक पर नियत स्थान के अलावा अपना नाम, रोल नम्बर, फोन नम्बर या कोई भी ऐसा चिह्न जिससे आपकी पहचान हो सके, अंकित करते हैं अथवा अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं, या कोई अन्य अनुचित साधन का प्रयोग करते हैं, जैसे कि अंकित किये गये उत्तर को मिटाना या सफेद स्याही से बदलना तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित किये जा सकते हैं ।
9. आपको परीक्षा समाप्त होने पर मूल OMR पत्रक निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और परीक्षा समाप्ति के बाद उसे अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें । हालाँकि आप परीक्षा समाप्ति पर मूल प्रश्न-पुस्तिका तथा OMR पत्रक की डुप्लीकेट प्रति अपने साथ ले जा सकते हैं ।
10. केवल C.B.S.E. द्वारा प्रदान किये गये काले बाल प्वाइंट पेन का ही इस्तेमाल करें ।
11. किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।
12. गलत उत्तरों के लिए कोई नकारात्मक अंक नहीं हैं ।



## KONKANI

### कोंकणी

#### Paper – III

#### प्रश्नपत्र – III

**Note :** This paper contains **seventy five (75)** objective type questions of **two (2)** marks each. **All questions are compulsory.**

**नोट :** इस प्रश्नपत्र में **पचहतर (75)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न के **दो (2)** अंक है । सभी प्रश्न अनिवार्य है ।

**सुचोवणी :** ह्या प्रश्नपत्रांत वट्ट पाऊणशे (75) भौपर्यायी जापेचे प्रस्न आसात. दर प्रस्नाक दोन (2) गुण दवरल्यात. सगळे प्रस्न अनिवार्य आसात.

1. “आतां धोंकुली गांवाची कोणि तुस्त करुं ? धोंकुली नांव जें आस, तें दों उतरांचें मांडता. येक उतर फिरंगी भाशेचें हेर कोंकणिये भासेचें, फिरिंगे जें आसा तें दों, कोंकणे जे आसा तें कुळी फिरिंगे उत्तर” हीं वाक्यां हांतल्या कोणे आनी खंयच्या ग्रंथांत बरयल्यात ?
  - (1) पिटर पुराण – फा.एतियन दला क्रुवा
  - (2) सांत आंतोनिचीं अचर्या – आंतोनियु द सालदान्य
  - (3) वनवाळ्यांचो मळो – मिगेल द आल्मैदा
  - (4) सगळ्या वरुसांचे वांजेल – इनाझियु आर्कामोनी
2. इ.स. १९०७ ह्या वर्सा जोसेफ सालढाणान संपादित केल्ल्या क्रिस्तपुराणाचे लिव्यंतरण हांतल्या कोणे आनी खंयच्या वर्सा केलें ?
  - (1) जोसेफ मिगेल; इ.स. 1966
  - (2) अ.का. प्रियोळकार, इ.स. 1940
  - (3) शान्ताराम बंडेलु; इ.स. 1956
  - (4) ओलिविन्यु गॉमिश, इ.स. 1985
3. “पाखले न्हावपाक फाटी आशिल्ले जाल्यार ते तुमगेले साहित्य कित्याक जाळटले ?” ही उतरां –
  - (1) आमगेले गिरेस्त साहित्य पाखल्यांनी जाळून वडोवन साहित्यिक नदरेन आमकां गरीब केले अशें म्हणून दुकां गाळपी कोंकणी लोकांक उद्देशून चा.फ्रा. दि कोशतान म्हटल्यात.
  - (2) आदल्या शतकांतल्या साहित्याची कसलीच सुलुस लागना म्हण खंती जाल्ल्या गोंयकारांक उद्देशून शणै गोंयबाबांनी म्हळें.
  - (3) रामायण, महाभारत आनी पाद्रींनी रचिल्लें साहित्य सोडल्यार कसलेंच साहित्यिक दायज नाशिल्ल्यांक मो. दाल्गाद हांणी म्हटलें.
  - (4) कोंकणीक इतिहास ना म्हणपी गोंयकार विद्वानांक उद्देशून कुंज रिव्हार हांणी म्हटलें.
4. उमेदी नव-लेखकांक बरोवपाक उर्जा दिवपाखातीर बरयल्ले पत्र हांतलें खंयचें ?
  - (1) ‘पोएटीक्स’
  - (2) ‘आर्स पोएटीका’
  - (3) ‘पेरि इत्सुस’
  - (4) ‘रिपब्लिक’

5. समीक्षेच्या मळाचेर चलतल्या 'सत्यं, शिवं आनी सुंदरम्' हे प्लेटोच्या आदी सावन चलत आयिल्ले विचार धारेतल्यान फकत 'सुन्दरम्' हे विचार-धारेक कोणे आपणायलां ?

- |                       |                       |
|-----------------------|-----------------------|
| (1) विंक्टिलियन       | (2) लॉजायनस           |
| (3) विलियम वर्डस्वर्थ | (4) बेनेदेत्तो क्रोचे |

6. "आज गांवकार रान पळोवंक या म्हणटा गो भोवाळें जिरें-कोथनिरी"

वा

"बुद्धी अश्यो केल्यो रामाय शोव गो शोण ।

गांवकार असो सांगूक भोंवना रामय शोव-

गे शोव". ह्या अशा गीतांनी कसले तरेच्यो

कुरवो पळोवंक मेळटात ?

- (1) गोंयातल्या गोवकारी ग्रामसंस्थेच्यो.
- (2) गोंयातल्यान चलतल्या कोमुनिदादीच्यो कारभाराच्यो.
- (3) गोंयांत चलपी पंचायत राजकारभाराच्यो.
- (4) गोंयांतल्या आदल्या काळांतल्या गांवगाड्याच्या व्यवस्थेच्यो.

7. कोंकणी लोकवेदांतल्यो 'मंजुळा राणी, शापन्न भाशी कीर' ह्यो काणयो कित्याचेर उजवाड धालतात ?

- |                                  |  |
|----------------------------------|--|
| (1) सुकण्यांच्या भाशीक तांकीचेर. | (2) सवती मत्सराचेर.                        |
| (3) राजा आनी राणयेची मोगा काणी.  | (4) कोंकणी लोकवेदांतल्या अद्भूत काणयांचेर. |

8. धालो उत्सवांत धर्तरेच्या पुजेची कामना तशीच वनदेवतेची होरावणी आसा.

- (1) विधानांतलो पयलो वांटो बरोबर आनी दुसरो चूक आसा.
- (2) पुराय विधान बरोबर आसा.
- (3) विधानांतलो पयलो वांटो बरोबर जाल्यार दुसरो वांटो चूक आसा.
- (4) पुराय विधान चूक आसा.

9. सकयल दिल्ली खंयची दोन विधानां चूक आसात ?

अ. धानोळें-केपें हांगा मेळिल्ली प्रस्तर चित्रां सादारण सहजार वर्सां आदली आसात.

ब. कुळंबी समाजांत कार्तिक पाडवो ते मार्गशीर्ष पाडवो मेरेन दिंडलो नांवाचो लोकनाचाचो उत्सव मनयतात.

क. लोकगीतांतले आकृतीबंध, सूर, संगीत, आशय आवेश धेवन कवितेची निर्मणी करपी पयलो कवी म्हळ्यार रमेश वेळुस्कार.

ड. लोकवेदांतले भौतेक प्रकार भौजन समाज घराभायर सादर करतात. अशें म्हणप चूकच.

- |                 |                 |
|-----------------|-----------------|
| (1) अ आनी ब चूक | (2) ब आनी ड चूक |
| (3) ब आनी क चूक | (4) क आनी ड चूक |

10. “तांकां आयकूंक देवाचो भगत तसोच बसलो पण दुखां हिंपुट्या निमती त्या मनशाच्यान, एकूय उतर पण सांगू जायना जालें ; तें भक्तान देखून, ताजी भुजवण केली आनी ताका संभोखून म्हणालें; आगा मनश्या, तुज्यान जर उलोवं जायना तर धरा वच, आनी तुजी समेस्तां पातकां एका कागदार बरय आनी म्हजेडे वेगीं परतून यो.” हो परिच्छेद हांतल्या खंयच्या ग्रंथातलो आसा ?

- |                            |                              |
|----------------------------|------------------------------|
| (1) ‘वनवाळ्याचो मळो’       | (2) ‘देवाची एकांग्र बोलणी’   |
| (3) ‘सांत आंतोनीची अचर्या’ | (4) ‘सगळ्या वरुसाचें वांजेल’ |

11. कोंकणीत आधुनिक नवल-काणयेच्या तंत्रांत बसपी देवनागरी लिपयेंतली पयली-वयली नवलकाणी खंयची ?

- |                     |              |
|---------------------|--------------|
| (1) ‘काळी गंगा’     | (2) ‘तुळशी’  |
| (3) ‘संवसार-बुट्टी’ | (4) ‘अच्छेव’ |

12. “तो ग्रंथ तत्त्वगिन्यानान सोबीत चित्राभशेन आनी प्रतिमावळीन थपथपला आनी व्हावत्या तालार चलतल्या सुळसुळीत वाक्यांनी मांडला” अशें मत डॉ. ऑलिविन्यु गोमिश हांणी खंयच्या ग्रंथाविशीं उक्तायलां ?

- |                            |                           |
|----------------------------|---------------------------|
| (1) ‘क्रिस्त पुराण’        | (2) ‘वनवाळ्यांचो मळो’     |
| (3) ‘देवाची एकांग्र बोलणी’ | (4) ‘आब्रावांचें यज्ञदान’ |

13. सकयल्या संवादांची फावत्या रचनेकडेन आनी रचनाकाराकडेन जोडी लायात.

1. ‘भागल्या आसतेली गो रुच जित्या नुस्त्याची, खालां ते जिरुना जातलें, आतां निवळपाक जाय न्हूं गो ?’
  2. ‘म्हजी मम्मा ते घरा करता. हांव, म्हजो भाव आनी डॅडी, मम्मान विणिल्लेच स्वेटर धालतात’.
  3. ‘कौन गांधी ? इंदिरा गांधी, राजीव गांधी या संजय गांधी !’
  4. ‘कितले दीस असो एकोडो रावतलो ? आता लग्न जावन घरसंसार चलय !’
  5. भोगदंड – हेमा नायक
  6. गुणाजी – पुंडलीक नायक
  7. श्रीनिवास – चंद्रकान्त केणी
  8. पाषाणकळी – ज्योती कुंकळकार
  9. मोनी व्यथा – रमेश वेळुस्कार
- |                        |
|------------------------|
| (1) 1-5, 2-7, 3-6, 4-8 |
| (2) 1-5, 2-8, 3-6, 4-7 |
| (3) 1-6, 2-8, 3-7, 4-9 |
| (4) 1-9, 2-8, 3-7, 4-6 |

14. ‘आंगावयलें भांगर हांवें हाडूंक ना. तुवें हाडिल्लीं उंची न्हेसणाय हांवें थंयच दवरल्यात पूण म्हजो निर्णय बदलचोना.’ अशें कोणे कोणाक म्हळां ?

- |                               |                                  |
|-------------------------------|----------------------------------|
| (1) पारुन श्रीनिवासाक सांगलें | (2) उण्णयान श्रीनिवासाक सांगलें  |
| (3) पारुन उण्ण्याक सांगलें    | (4) श्रीनिवासान उण्ण्याक सांगलें |

15. 'शैलीची नितळसाण' हाचेर खंयच्या साहित्यिक वादांत चड भर दिलां ?

- |                 |                    |
|-----------------|--------------------|
| (1) अस्तित्ववाद | (2) प्रतीकवाद      |
| (3) क्लासिकवाद  | (4) नव्यशास्त्रवाद |

16. सकयल दिल्ल्या उतरांचो फावो तो अर्थ लावन तांच्यो योग्य जोड्यो लायात.

- |                  |                 |
|------------------|-----------------|
| 1. मुस्तइरांत    | 5. नांगराचो फाळ |
| 2. पोर्ति पाळुड् | 6. मठांत        |
| 3. जगाल          | 7. न खातां      |
| 4. हामनास्सोडणो  | 8. जापेखातीर    |
|                  | 9. पेंपारे      |

- |                        |
|------------------------|
| (1) 1-6, 2-8, 3-5, 4-7 |
| (2) 1-8, 2-6, 3-5, 4-9 |
| (3) 1-6, 2-7, 3-5, 4-8 |
| (4) 1-7, 2-5, 3-6, 4-8 |

17. सांसव, मणकट, आंबील, बांय हीं उतरां कोंकणीत खंयचे मूळ भाशेंतल्यान आयल्यात ?

- |           |              |
|-----------|--------------|
| (1) तमिळ  | (2) तेलगू    |
| (3) कानडी | (4) मल्याळम् |

18. "ह्य..... लांणी पुराणूय बरयलां आनी छापलां, पूण तें माका दिसता मराठे भासेन आसा. कितेंय जांव, तें आमी उलयतांव ते भासेन कांय नूंय. आनी तें समजूचें आदी हांव ग्रेम भास सोमजोन" अशें कोणे कोणाक सांगलें ?

- |                       |                            |
|-----------------------|----------------------------|
| (1) जानीक पाद्र विगार | (2) पाद्र विगार दिओग रोचाक |
| (3) दिओग रोच जानीक    | (4) जानी दिओग रोचाक        |

19. हांतलें खंयचें उतर शुद्धलेखनाच्या नदरेन सारकें आसा ?

- |                  |                 |
|------------------|-----------------|
| (1) नीरवैरताय    | (2) निर्वैरताय  |
| (3) निरैवेर्यताय | (4) निरवेर्यताय |

20. हांतल्या मूर्त नामासावन जाल्ल्या अमूर्त नामाची देख हांतली खंयची ?

- |             |            |
|-------------|------------|
| (1) घटाय    | (2) खारसाण |
| (3) सोयरेपण | (4) उंचाय  |

21. सकयल दिल्ल्या संकलनांतले खंयचे निबंद 'सुनापरान्त' दिसाळ्याच्या 'पारिजात' ह्या सदरांत उजवाडून येवंक नात ?
- (1) 'वेंचिल्ले खीण' (2) 'लोकरंग'  
 (3) वळेसर (4) लिखणेचे उत्फर्के
22. नामासावन तयार जालमें क्रियापद खंयचें ?
- (1) धांवडावप (2) गुठलावप  
 (3) खतावप (4) वांटोवप
23. बालगितांतल्या भुरग्यांल्या प्रस्नाक मोनजाती भुरग्यांलेच भाशेंत जाप दितात तेन्ना समिक्षणाचे भाशेंत तें –
- (1) भुरग्यांली नादमय भास जाता. (2) मानवीकरण जाता.  
 (3) भुरग्यांलो संवसार जाता. (4) नाद-अणकारी उतरांची भास जाता.
24. भास म्हळ्यार ध्वनिरुप वेवस्था; पुण भाशेची मांडावळ करपी वेवस्था मात ध्वनिरुप नासतां.
- (1) पुराय वाक्य बरोबर आसा.  
 (2) वाक्यांतलो पयलो भाग बरोबर आनी दुसरो भाग चूक आसा.  
 (3) वाक्यातलो पयलो भाग चूक आनी दुसरो वांटो बरोबर आसा.  
 (4) पुराय वाक्य चूक आसा.
25. "मोड कसो येवन तुवें/गुलामपणार माल्ली फूंक सुस्तेलल्या इंगळ्यावेलो/धवो शेलो गेलो उबून" ह्यो वळी कोणाक उद्देशून आनी कोणे रचल्यात ?
- (1) राम मनोहर लोहिया – नागेश करमली. (2) शणै गोंयबाब – मनोहरराय सरदेसाय.  
 (3) राम मनोहर लोहिया – मनोहरराय सरदेसाय. (4) बाकीबाब बोरकार – र.वि. पंडीत
26. "आपुल्या पिलांक जैसी पाखिणी सांभाळिता तैसो आमचो सुफळु भक्तु आपल्या सेवकांक सांभाळुनु, तांचो आधारु करित." हांतलो अलंकार वळखात.
- (1) अनुप्रास (2) उपमा  
 (3) श्लेश (4) विरोधाभास
27. 'ह' हें व्यंजन कसल्या प्रकारांत येता ?
- (1) ताळवे व्यंजन (2) ताळ्याचें व्यंजन  
 (3) दांतये व्यंजन (4) दांत-ताळवेचें व्यंजन

28. मुंबयच्यान उजवाडून येवपी 'चाबूक' ह्या साताळ्याचें उजवाडावणेचें वर्स हांतलें खंयचें ?
- (1) इ.स. 1940 (2) इ.स. 1941  
(3) इ.स. 1945 (4) इ.स. 1946
29. कन्नड लिपयेंतली सगळ्यांत चड लांबायेची 'चन्ना' ही कोंकणी कादंबरी बरोवपी म्हूण कोणाची नामना आसा ?
- (1) एडविन डिसौझा (2) ए.टी. लोबो  
(3) खडाप (4) ज्योआकि सांताना आल्वारिश
30. 'शब्दार्थयो यथावत् सहभाव साहित्यम्' अशी साहित्याची व्याख्या हांतल्या कोणे केल्या ?
- (1) भामह (2) दण्डी  
(3) राजशेखर (4) वामन
31. 'खातखुतल्यो' ह्या निबंद झेल्याक 'तिरसुवादी मेफील' ही प्रस्तावना बरोवपी कोण ?
- (1) चन्द्रकान्त केणी (2) तानाजी हळर्णकार  
(3) दत्ताराम सुखठणकार (4) अ.ना. म्हांबॅरो
32. 'रोमॅन्टिक क्रांतीक' सगळ्यांत पयली कोणे जल्म दिलो अशें मानतात ?
- (1) गिव्होव्हानी बोकासियो (2) ॲल्लिगियेरी दांते  
(3) सॅम्युअल टेलर कॉलरिज (4) रुसो
33. 'लोकधर्मी' आनी 'नाट्यधर्मी' संकल्पना हांतल्या कोणे मांडल्यो ?
- (1) मम्मट (2) विश्वनाथ  
(3) भरतमुनी (4) अभिनव गुप्त
34. ए.ए. सालदाणा हांची समाजीक नवलिका हांतली खंयची ?
- (1) 'हें म्हजें काळीज' (2) 'काळखांतुलो कळो'  
(3) 'जीवो वा मेल्लो' (4) 'स्वीकार'
35. 'प्रगती प्रकाशन आनी सांताक्रूझ प्रकाशन' ह्यो दोन प्रकाशन संस्था हांतल्या खंयच्या वाठारांतल्यान आपलो वावर चलयतात ?
- (1) मंगळुरु (2) पणजी  
(3) कोचीन (4) पुणे

36. 'काळीझ मुरमुरे' ही रचना कसले तरेची आनी तिचो रचनाकार हांतलो कोण ?
- (1) कविता – जे.बी. सिक्वेरा (2) विनोदी निबंद – लॅन्सी पिंटो  
(3) भक्तिगीतां – स्वामी सुप्रिय (4) कथा – एडविन् जे.एफ्. डिसौझा
37. 'सिंगापूरचो सावकार' ही रोमांसी बरोवपी हांतलो कोण ?
- (1) रेजिनाल्ड फॅर्नादिश (2) जुआंव कायतान द सौझ  
(3) एफ्.एक्स. फॅर्नादिश (4) आन्तोनियु विसेन्त द क्रुझ
38. सकयल्या वाक्यांतलें बरोबर वाक्य खंयचे ?  
शणै गोंय बाबांल्या 'कोंकणी नादशास्त्र' ह्या पुस्तकांत –
1. कोंकणी भास कशी वाचची हें दाखयलां.  
2. स्वर आनी लिंगाच्या नात्याचेर उजवाड घाला.  
3. विंगड भासांतल्या उतरांची वळख दिल्या.  
4. कुखो त्योच आसल्यो म्हुण नाद तेच नासतात, ह्या सारकेल्या गजालीचेर उजवाड धातला.
- (1) पयलें आनी दुसरें (2) दुसरें आनी तिसरें  
(3) तिसरें आनी चवथें (4) चवथें आनी दुसरें
39. केरळांत मोट्या प्रमाणांत नाटकां सादर केल्ल्याची नोंद मेळटा ताचे नांव –
- (1) आर. भास्कर (2) एन्. पुरुषोत्तम मल्ल्या  
(3) नारायण नरसिंह पै (4) कृष्णाजी राव सुरकुंद
40. 'सर्जकाची आंतरकथा' ह्या पुस्तकांत 'जिविताचें भांगर करपी पुस्तक' अशें खंयच्या रचनेविशीं बरोवपी म्हणटा ?
- (1) रामायण (2) भगवद्गीता  
(3) महाभारत (4) बायबल
41. 'कोंकणी काव्याचे जिवसाणेची खूण म्हळ्यार र.वि. पंडित हांची कविता, जाल्यार तांचो मुक्तछंद धोग्यांनी कोसळत मनाक तीर्थस्नान धालता' अशें र.वि. पंडितांच्या काव्याक उद्देशून कोण म्हणटा ?
- (1) पं. महादेवशास्त्री जोशी (2) रवींद्र केळेकार  
(3) सु.म. तडकोड (4) चंद्रकान्त केणी
42. 'दुसऱ्याच्या आदारार फोल्गा मारपाक आनी मौजमजा करपाक रंजनाक बेस बरें कळटा' ह्या वाक्याक खंयची म्हण लागू पडटा ?
- (1) हातच्या कांकणाक हारसो कित्याक ? (2) आयत्या पिढार रेगोट्यो  
(3) आयत्या बिळांत नागोबा (4) फुलू खुस्तार खोजनोमारप



43. त्रासदीक (Tragedy) म्हाकाव्यापरस वयलो पांवडो मेळचो अशें अॅरिस्टोटलाक कित्याक दिसता ?
- (1) महाकाव्यापरस त्रासदी लांबायेन व्हड आसता आनी ती सर्गबद्ध आसता.
  - (2) त्रासदी विंगड-विंगड अभिरुची आशिल्ल्या प्रेक्षकांकडेन आनी सगळ्या पांवड्यावेल्या लोकांमेरेन पावता.
  - (3) त्रासदीतलो अभिनय करपी नट प्रभावी आशिल्ल्यान तत्त्वो अभिनय प्रेक्षकांच्या मनाकडेन संवाद सादता.
  - (4) त्रासदी माचयेर सादर जातना प्रेक्षकांचो सहभाग तांचेकडेन संपर्क सादून करुन घेता.
44. “कवीन प्रतिमेंतल्यान तरल भाववृत्ती आपले चिमटेंत धरिल्ली आसता. रसीक जरी कवीचे संवेदनशीलतेच्या उंचायेर पावलो ना तरी कवीन निर्माण केल्ली प्रतिमा तागेली कल्पनाशक्त जागयता.”
- (1) वयल्या वाक्यांतलो पयलो वांटो सारको दुसरो चूक.
  - (2) पुराय वाक्य बरोबर.
  - (3) पयलें वाक्य चूक दुसरें बरोबर.
  - (4) वयल्या वाक्यांतलो दोनूय विधानां चूक.
45. शणै गोंयबाबाली व्याकरणीक उतरावळ संस्कृत भाशेचे बुन्यादीचेर उबी आसा देखून –
- (1) पर्यायी कोंकणी उत्तर घडोवपाक संद आसता तेन्ना मूळ संस्कृत उतराक ते व्याकरणीक विसकटावणेंत धोळूंक दिनात.
  - (2) पर्यायी कोंकणी उतराक ते संस्कृतातलें मूळ उतरच दितात.
  - (3) संस्कृता परस वेगळी दिसप हो कोंकणीचो उद्देश आशिल्ल्यान केन्ना केन्ना इंग्लीश उतरांक लागीची उतरां ते घड्यतात.
  - (4) व्याकरणाच्या परिभाशिक उतरांचोच चड वापर ते आपणाल्या बरपावळींत करताले.
46. ‘स्वच्छंदवादी संकल्पना’ ह्या लेखांत स्वच्छंदतावादाचे (Romanticism) तीन निकश हांतल्या कोणे मांडल्यात ?
- (1) विलियम वर्डस्वर्थ
  - (2) रॅने वॅलॅक
  - (3) कीटस्
  - (4) शेले
47. ‘जी दृश्टावांत सुर्यो न्हेसून आस  
पायांतळां चंद्रीम नखेत्रांचो  
मात्यार मुकुट धालून ती जल्मली  
नद नितळा उदकाची ती शिंपताली  
जिनसांची लवलवीत झाडां भोंवती  
दिश्टी पडतोच नदर धादोसताली ।।’  
वयल्यो वळी खंयच्या काव्यांतल्यो आसात ?
- (1) आब्रांवाचें यज्ञदान
  - (2) रीगलो जेझू मळ्यांत
  - (3) एव आनी मरी
  - (4) पुलफाराची बायल

48. सगळे भाव गुरु प्रजा रामाचे वाटेन रावते ।  
सगळ्या राज्यार लात मारुन कोण वनांत धांवते ॥  
..... आवयच्या वरान राज्य धरान चलुन आयिल्लें आयतें ।  
भरता शिवाय कोण ताजेर सांगात उदक सोट्टे ॥  
ह्या कवितांच्या वर्ळींचो रचनाकार हांतलो कोण ?
- (1) कृष्णदास शामा (2) सोहिरोबानाथ अंबिये  
(3) कृष्णभट्ट बांदकर (4) संत नामदेव
49. आलैशु मार्तीन्यु ज्यूलियु द मेलु हांचे कोंकणी भाशेचें दुसरें पुस्तक ह्या क्रमिक पुस्तकाच्या उजवाडावणेचें वर्स हांतलें खंयचें ?
- (1) इ.स. 1940 (2) इ.स. 1935  
(3) इ.स. 1955 (4) इ.स. 1945
50. गोंयातल्या क्रिस्तांव समाजावांगडा एकवट आनी एकचारपणाची देख दिवपाक –
- (1) गोंयातल्या हिंदूनी तांच्या चलयांकडेन लग्नां करुन संबंघ जोडले.  
(2) कांय हिंदू बरोवप्यांनी आपले परीन रोमी लिपयेंतल्यान साहित्याक योगदान दिले.  
(3) गोवा कोंकणी अकादमी रोमी लिपयेंतल्या साहित्याक इनामां दिवपाक लागली.  
(4) कोंकणी कवी जेझूची भक्तीगीतां रचून आपलो भावार्त त्या धर्माविशीं उगतावपाक लागले.
51. कवितेच्यो वर्ळी आनी कवयित्री हांच्यो योग्य त्यो जोड्यो खंयच्यो ?
- a. प्रलयांत व्हांवत वतना / तुजोचहात दिशिल्लो  
कांय म्हाकाच फटोवन / तेन्ना प्रलयूच हाशिल्लो i. ग्वादालूप डायस
- b. वेळुच्या गो दाट रानांत/घुमलो वेणूचो नाद  
सैरभर जाली राधा / कृष्णान घालो साद ii. नूतन साखरदांडे
- c. जोगलांचो नाच चल्ला / पयस दोंगुल्ल्यां आड  
पानांपानांनी थरथरता / म्हजें काजुल्याचें झाड iii. माया खरंगटे
- d. सवण्या म्हज्या उडचेंच तुवें / म्हजी केन्नाय करचीयाद  
मळबामेरेन पावलें तरी / म्हाकाकेन्नाथ धालचो साद iv. लीना पेडणेकर
- v. नयना आडारकार
- |     | a  | b   | c   | d  |
|-----|----|-----|-----|----|
| (1) | v  | iii | ii  | i  |
| (2) | v  | ii  | iii | i  |
| (3) | iv | ii  | iii | i  |
| (4) | v  | i   | iii | ii |

52. 'सत् युगांत देवखंय सर्गांतसून धर्तरेर थेवन मनशांबरोबर चकाटच मारुन परतताले. त्रेतांत मनशांले आध्यात्मिक सत्व चवथायेन गणसलें आनी देव मनशाची संगत सोडून गरज तेन्नाच येवं लागले. द्वापरांत आनी एक चवथाय गणसली. दर युगाबरोबर सत्य चवथायेन गणसलें आनी देवांचे येणे फकत कांय खिणांकूच जांवक लागले .....!'

हो निबंदातलो उतारो खंयच्या निबंद झेल्यांत आसपावता ताचो बरोवपी कोण ?

- (1) वळेसर – मुकेश थळी (2) पालवा पान – सुमेधा कामत  
(3) लिखणेचे उत्फर्के – दिनेश विनायक भरणे (4) ब्रह्मांडातलें तांडव – रवींद्र केळेकार

53. रोमी लिपयेंतल्यान आयजय काव्यसंग्रहाची निर्मणी चडावत प्रमाणांत ना जावपत्वी कारणां \_\_\_\_\_

- (1) तांचे काव्य एक तर भक्तीकाव्य आसता ताका व्हडलीशी वाचकांची पसंती नासता.  
(2) रोमी लिपयेंतल्या उजवाडून आयिल्ल्याकाव्य साहित्याची नोंद व्हडल्यो साहित्यिक संस्था घेनात.  
(3) तांणी रचिलमीं चडशी कांतारां आनी गीतां तत्कालीन आनी मनरिजवणेचीच जावन आसतात.  
(4) रोमी लिपयेतल्यान बरोवपी कवींची संख्याच मुळांत उणीच आसा.

54. बौदलेअरान मांडिल्लो भौतिक आनी अध्यात्मिक संसारांमदली सुसुत्रताय हो विचार खंयचे तरेच्या काव्यान आपणायलो ?

- (1) वास्तववाद (2) अस्तित्ववाद  
(3) स्वच्छंदवाद (4) प्रतीकवाद

55. 'ह्या गोंयांत सोरो आनी मटको बंद जावप शक्यच ना. सामकेंच सांगपाचें जालें जाल्यार जो मेरेन हो चंद्र सूर्य आसा तो मेरेन तरी नाच ना.' हो उतारो खंयच्या निबंदातलो ते वळखात \_\_\_\_\_.

- (1) वेंचिल्ले खीण – 'एका हातात फिल्म दुसऱ्या हातांत अळमी ।'  
(2) ऋतुचक्र – 'काले गेले वाले गेले.'  
(3) लिखणेचे उत्फर्के – 'पांच घोवाची बायल'  
(4) मान्नी पुनव – नम्रतायेचें नाटक

56. फ्रेंच समिक्षक जुलियन सीजर स्कैलीजर हाणें 'पोएतिसीस लिब्री सेप्टेम' हो ग्रंथ खंयच्या वर्सा बरयलो ?

- (1) इ.स. 1665 (2) इ.स. 1561  
(3) इ.स. 1762 (4) इ.स. 1910

57. विज्ञान आनी धर्म हांतलो वाद हांतल्या कोणाच्या अभिव्यक्तितल्यान उगतो जाता ?

- (1) टेनिसन आनी ब्राऊनिंग (2) ड्रायडन आनी जॉन्सन  
(3) कॉलरिज आनी स्विनबर्न (4) दो. जॉन्सन आनी हार्डी

58. इतिहासिक आनी समाजीक श्रेश्टत्वाक कलात्मक श्रेश्टत्वा बरोबरची सुवात दिवपी हांतलो कोण ?

- |                   |                    |
|-------------------|--------------------|
| (1) क्रिस बाल्डीक | (2) हेगेल          |
| (3) झुल           | (4) आर्थुर रिम्बॉद |

59. चिंच ना पिंपळ ना, वडा मोगाळ सावळीन

कुळागरा मायेबगर तान म्हजी पालवना  
तांबडे मातयेबगर म्हजें रगत लेगीत जालें काळें

.....

वयल्या कवितेची निमणी वळ खंयची ?

- (1) पोरण्यो यादी चाळीत दोनूच दुकां गळयन हांव.
- (2) चुकून सगळे अदमास म्हजे तांतूत शेणटा हांव.
- (3) पांचवेचार मळांबगर काळजांत म्हज्या सडे.
- (4) काळजाभितर खळखळटा तुजोच माये वझरो.

60. धातूंक लागपी कुसांक आनी नामांक लागपी कुसांक किदें म्हणटात ?

- |                        |                      |
|------------------------|----------------------|
| (1) आख्यात आनी विभक्ती | (2) प्रत्यय आनी उपपद |
| (3) तद्धित आनी विभक्ती | (4) कृदंत आनी आख्यात |

61. अ. कोंकणीत अल्पप्राण सगळ्या सुवातांनी मेळटात.

ब. कोंकणीतले अल्पप्राण उतरांचे सुर्वेकच मेळटात.

क. कोंकणीतले महाप्राण उतरांचे सुर्वेकच मेळटात.

ड. कोंकणीतले महाप्राण उतरांचे निमाणेकडेनच मेळटात.

- |                   |                   |
|-------------------|-------------------|
| (1) अ आनी क बरोबर | (2) ब आनी अ बरोबर |
| (3) क आनी ब बरोबर | (4) ड आनी अ बरोबर |

62. १६ व्या शेंकड्यांत येशू ख्रिस्ताच्या खुरसार चडोवपाच्या प्रसंगाचेर आदारुन कसले तरेची रचना आनी कोणे केली ?

- (1) 'खुरसांची गीतां' – एतियान द ला क्रुवा
- (2) विळाप गीतां – आंतोन द सालदांज्ज
- (3) विळाप गीतां – पा. गाशपार द सां मिगेल
- (4) भक्ति गीतां – दियोगु रिबैरु

63. 'समाधानाची उतरां' ही प्रस्तावना खंयच्या पुस्तकाखातीर आनी कोणे बरयल्या ?
- (1) 'कोंकणी सरस्पतीचो इतिहास' – रवींद्र केळेकार
  - (2) 'कोंकणी अभ्यासकोश' – पुंडलीक नायक
  - (3) 'शाकुंतल' – उदय भेंब्रे
  - (4) 'मानस गंगोत्री' – सुरेश गुंडु आमोणकार
64. कुंडो खाता तो उंडो मागीना हे म्हणीचो अर्थ
- (1) कुंडो खावपी मनशाक आनीक कांयच आवडना.
  - (2) भुकेल्लो रोटी मागता पुण पंचपरखन्नां मागीना.
  - (3) दिल्ल्या कुंडयातच समादानी जावपी मनीस.
  - (4) भुकेल्ल्या मनशाक सगळेच तरेचे खाग सारकेंच दिसता.
65. \_\_\_\_\_ हे संज्ञेक करणी दाखोवपी सगळी रूपां आसपावतात.
- (1) धातूसाधित
  - (2) कृदन्त
  - (3) क्रियापद
  - (4) कर्मणी
66. गोंयांत हिंदु-क्रिस्तावांच्या एकचाराच्या घटामूट नात्याचें कलात्मक रीतीन बेस बरें दर्शन चांदरच्या मुसळ नाचांत घडटा तशें आनी खंयच्या नाचांत घडटा ?
- (1) देखणी
  - (2) पेरणी जागोर
  - (3) जागोर
  - (4) मांडो
67. वाक्यांत कसलींय उतरां आसून तांतूत एक लेगीत उनर स्त्रिलिंगी आसले जाल्यार त्या वाक्यांतले क्रियापद \_\_\_\_\_ जाता.
- (1) पुल्लिंगी आनी एकवचनी
  - (2) अलिंगी आनी भोववचनी
  - (3) स्त्रीलिंगी आनी भोववचनी
  - (4) अलिंगी आनी एक-वचनी
68. "शेंकड्यानी वर्सां एकठांय रावूनय गोंयकार हिंदू आनी क्रिस्तांव एकमेकांक सारके वळखूंक पावल्यात अशें म्हाका दिसना" ही वाक्यां कोणे आनी खंय बरयतात ?
- (1) रवींद्र केळेकार – पांथस्थ
  - (2) प्रकाश थळी – फुलां आनी फोगोट्यो
  - (3) अ.ना. म्हांबरो – गोंयची अस्मिताय
  - (4) दत्ताराम सुखणकार – मान्नी पुनव

69. Glotto chronology ह्या उतराक कोंकणीत हें \_\_\_\_\_ प्रतिउतर आसा.
- |                      |                         |
|----------------------|-------------------------|
| (1) व्याकरणी गिन्यान | (2) भाशीक काळनिर्णय     |
| (3) भाशीक विस्कटावणी | (4) इतिहासिक काळनिर्णयन |
70. 'लोचन' ह्या ग्रंथाचो कर्तो कोण जो भारतीय अलंकारशास्त्राचेर निंबून रचिल्लो आसा ?
- |                |                |
|----------------|----------------|
| (1) भट्ट नायक  | (2) मुकुल भट्ट |
| (3) अभिनवगुप्त | (4) कुंतक      |

सकयल दिल्लो उतारो वाचून ताच्या सकयल दिल्ल्या प्रश्नांच्यो जापो दियात :

क्रिस्तांव गांवकार भोवमतान आसल्यार, हिंदू गांवकारांक गांवकारीच्या बसकांतल्यान भायर दवरचे, अशें 1566 वर्सा केल्ल्या कायद्यान थारायलें. भाताचीं शेतां, मळे, माडांची भाटां हांचे पावणेंत क्रिस्तांव पावणेकारांक पयली पसंती दिवची अशें ताचे फुडल्या वर्सा केल्ल्या एका कायद्यान थारायलें. क्रिस्तांव गांवकार आनी हिंदू गांवकार हांचे मदल्या परस्पर समाजीक संबंदाचेर बंदी घाली. हिंदूंनी जानवें घालपाचेर बंदी घाली आनी घातल्यारय, तें हेरांक दिश्टी पडपाक जायना असो कायदो केलो. हिंदूंनी आपले सण आनी सुवाळे जाहीर रीतीन करपाचेर बंदी घाली तांणी आपले लग्न समारंभ लेगीत दारां धांपून करचे असो कायदो केलो. अशें आसूनय, हिंदू धर्माचे सहिष्णु वृत्तीक लागून आमी हेर धर्माविशीं तांची वृत्ती अतिरेकी नाशिल्ल्यान तेच परीं तो समाज ताचे संस्कृती कडेन घट्ट बांदून आशिल्ल्यान, तो तिगून उरलो. हे तरेन जे लोक क्रिस्तांव जावंक नासले, ते अधिकारहीण वर्गाचे अवस्थेक पाविल्ले. तांचे मुखार दोन किंवा तीनच पर्याय उरिल्ले. तांणी गोंयांत एवन पिडापिडीच्या कायद्याखाला हाल अपेष्टा सोंसप किंवा पुर्तुगेज गोंयचे हद्दीभायर वचप किंवा क्रिस्तांव धर्म स्विकारून आपले जल्मभुंयेंत एवप. हजारांनी गोंयकारांनी क्रिस्तांव जावप नाकारलें आनी ते शेजारच्या राज्यांनी गेले. हांचे भितरल्या थोड्यांनी, आपले मदीं एक येवजण केली, जे वरवीं कुंटुबांतलो एकटो क्रिस्तांव जातलो आनी तो घर, भाटबेंस बरे तरेन सांबाळटलो. आनी राजकी आनी धर्मीक परिस्थिती सुधारतकच गोंयां भायर गेल्ले कुंटुबांतले हेर लोक परत येतले. पूण चडश्या कुंटुबांचे बाबतींत धर्मांतर केल्ल्या नातेवर्गीयांनी तांचो हक्काचो वांटो परतो दिवपाचें नाकारलें. हजारांनी लोकांनी क्रिस्तांव धर्म स्विकारलो आनी राज्यकर्त्यांनी आनी धर्मसंस्थेन दिल्ली शरवण आनी सवलती तांणी भोगल्यो. मानखंडना आनी हालअपेष्टा भोगून लेगीत कांय धीट हिंदू आपले जल्मभुंयेंत रावंक शकले. कातोल्क इगर्जेक जाती वेवस्था पसंत नाशिल्ली आनी धर्मांतर केल्ल्यांच्या जाती प्रथांक तिणें उत्तेजन दिलेंना. पूण धर्म बदलिल्ल्या क्रिस्तांवांनी आपले जाती विशींचे पूर्वग्रह सोडलेनात. धर्मांतर केल्ले बामण क्रिस्तांव आपणांक हेरां धर्मांतर केल्ल्या क्रिस्तांवां परस वरते समजताले आनी तांचे मंदी लग्नसंबंध जुळनासले. वेगवेगळ्या जातींतल्या धर्मबदलिल्ल्या लोकां मदीं समाजीक संबंध मर्यादीत आसले. गांवांतल्या इगर्जांतल्या कॉफ्रारी (conbrarias) मदीं लेगीत जातीचे पूर्वग्रह ठळकपणान दिसताले. गांवचीं फेस्तां वयल्या जातींच्याच लोकांक करपाक दिताले. वयले जातींतले क्रिस्तांव जाल्ले लोक, सुदीर जातींतल्या क्रिस्तांवांक कपेलांचीं आनी इगर्जांची फेस्तां करपाक दिनासले. इगर्जांची फेस्तां वयल्या जातींतल्या क्रिस्तांवां खातीरच राखून दवरिल्लीं. कॉफ्रारींच्या सभासदांनी समारंभांत घालपाची उपरणी (ऑपमुरसां) लेगीत जाती प्रमाणें वेगवेगळ्या रंगांचीं आसतालीं. वयल्या जातींचे क्रिस्तांव जाल्ले लोक सकयल्या जातींच्या क्रिस्तांवांच्या घरांत चडशे वचनासले.

71. 'आनी तांचे लागी लग्नसंबंध जुळनासले' अशे बरोवपी कोणा संदर्भांत म्हण्टा ?
- |  |
|--|
| (1) बामण आनी पोर्तुगाली क्रिस्तांव                         |
| (2) बामण क्रिस्तांव आनी हेर क्रिस्तांव                     |
| (3) हिंदू बामण आनी क्रिस्तांव बामण                         |
| (4) वयले जातींतले क्रिस्तांव आनी सुदीर जातींतले क्रिस्तांव |

72. पोर्तुगेज लोकांच्या धर्मिक पिडणुकेंतय गोयांत हिंदू लोक लिंगून उल्ले कारण

- (1) हिन्दू धर्म सहिष्णू आशिल्ल्यान
- (2) हिन्दू धर्मांत व्रतां आनी कर्मकांडां आशिल्ल्यान
- (3) गोंयात हिन्दू धर्माची देवळां खूप आशिल्ल्यान
- (4) धर्मसंस्थांक रारवण आनी सवलती आशिल्ल्यान

73. १५६६ वर्सा केल्ल्या कायदयांत हें कलम मुखेल आशिल्लें

- (1) हिंदूनी जानवें घालप ना
- (2) जानवें घाल्यारय तें हेरांक दिश्टी पडपाक जायना
- (3) हिंदू गांवकारांक गांवकारकीच्या बसकांतल्यान भायर दवरचें
- (4) हिंदूनी आपले सण मनोवप ना

74. 'उपरणी' म्हळ्यार किदे ?

- (1) वयल्या आंगार घेवपाचो शेलो
- (2) जातीप्रमाण आंगार घालपाचें लुगट
- (3) आंगार घालपाचें उत्तरीय वस्त्र
- (4) दादल्यानी दोनूय खांद्यावेल्यान घालपाचो शेलो.

75. कातोल्क इगर्जेन धर्मांतर केल्ल्यांच्या जाती प्रथांक किदयाक उत्तेजन दिलें ना ?

- (1) धर्म बदलिल्ल्या क्रिस्तांवानी आपले जातीविशीं चे पूर्वग्रह सोडलेना.
- (2) क्रिस्तांव गांवकार आनी हिंदू गांवकार हांचे मदल्या परस्पर संबंथाक बंदी आशिल्ली.
- (3) धर्मांतर केल्ले बामण क्रिस्तांव आपणांक हेरा धर्मांतर केल्ल्या क्रिस्तांवां परस वरते समजताले.
- (4) इगर्जेक जाती वेवस्था पसंत नाशिल्ली.

**Space For Rough Work**